शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 12
Issue 1&2
15 July 2021

'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में हिन्दी गद्य के रूपों का विवेचन'

बीज शब्द :

इतिहास, निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, एकांकी, आलोचना, आत्मकथा, साहित्यशास्त्र, इतिहासकार।

हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' के द्वितीय खंड में हिन्दी गद्य की विविध विधाओं का विश्लेषण किया गया है। इस क्रम में हिन्दी निबंध का विकास, हिन्दी नाटक का विकास, हिन्दी एकांकी का विकास, हिन्दी उपन्यास का विकास, हिन्दी कहानी का विकास, हिन्दी आत्मकथा का विकास और हिन्दी आलोचना का विकास शीर्षक से सात खण्डों में हिन्दी गद्य-रूपों के विकास का परीक्षण किया गया है। आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी गद्य की स्थितियों के परिचय-विश्लेषण करने के क्रम में गणपति चन्द्र गुप्त ने क्रमशः राजस्थानी गद्य, मैथिली गद्य, ब्रजभाषा-गद्य और खड़ी बोली के प्रारंभिक रूप को विस्तार से उद्घाटित किया है।

*****

सत्य प्रकाश सिंह
शोध छात्र
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में हिन्दी गद्य के रूपों का विवेचन'

गणपति चन्द्र गुप्त ख्रत 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास द्वितीय खंड' के उत्तरार्द्ध में विवेचित हिन्दी गद्य एवं उसके रूपों का विकास' शीर्षक के अंतर्गत हिन्दी गद्य का सामान्य परिचय मिलता है। जिसमें क्रमशः हिन्दी निबंध का विकास, हिन्दी नाटक का विकास, हिन्दी एकांकी का विकास, हिन्दी उपन्यास का विकास, हिन्दी कहानी का विकास, हिन्दी आत्मकथा का विकास और हिन्दी आलोचना का विकास शीर्षक से सात खण्डों में हिन्दी गद्य-रूपों के विकास को रेखांकित किया गया है। किसी भी भाषा के साहित्य में गद्य के विकास के संबंधमें उनकी मान्यता है कि 'जब किसी युग-विशेष में जीवन का दृष्टिकोण बौद्धिकतापरक, यथार्थवादी, वस्तुवादी एवं व्यावहारिक अधिक होता है तो उसमें गद्य को अधिक प्रोत्साहन मिलता है जबकि इसके विपरीत जीवन में भावुकता, तर्कशून्यता, आध्यत्मिकता एवं काल्पनिकता की प्रतिष्ठा होने पर उसमें अभिव्यक्ति पद्य का माध्यम अपनाती है।[1]

आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी गद्य की विकास यात्रा पर विचार करते हुए गणपति चन्द्र गुप्त का कथन है, आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी गद्य के अभाव का सबसे बड़ा कारण विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के कारण हमारे जीवन में बौद्धिकता के स्थान पर रागत्मकता, दार्शनिकता के स्थान पर भद्रि-भावना एवं यथार्थवादित के स्थान पर काल्पनिकता की प्रतिष्ठा हो जाना ही है अन्य कारण गौण हैं।[2] आधुनिक काल से पूर्व गद्य के अविकसित रहा किन्तु उन्नीसवीं शती के आते ही इसमें आश्चर्यजनक वृद्धि देखने को मिलने लगी। इसके कारणों का उल्लेख करते हुए गणपति चन्द्र गुप्त का विचार है, ''जब पुनः मुद्रण-यंत्र के प्रचलन, शिक्षण संस्थाओं की स्थापना, धार्मिक, सामाजिक एवं बौद्धिक आंदोलनों के उत्थान तथा पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार के कारण जीवन में ज्यों-ज्यों बौद्धिकता, ज्ञान तर्क एवं चिंतन की प्रतिष्ठा हुई त्यों-त्यों गद्य-साहित्य का भी विकास होता गया। उन्नीसवीं शताब्दी के पश्चात तो हिन्दी में गद्य-साहित्य की इतनी उन्नति हुई कि कुछ इतिहासकार हिन्दी-साहित्य के आधुनिक काल को 'गद्य-काल' तक की संज्ञा देते हैं।''[3]

आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी गद्य की स्थितियों के परिचय-विश्लेषण करने के क्रम में गणपति चन्द्र गुप्त ने क्रमशः राजस्थानी गद्य, मैथिली गद्य, ब्रजभाषा-गद्य और खड़ी बोली के प्रारंभिक रूप को विस्तार से उद्घाटित किया है। खड़ी बोली के प्रारंभिक गद्य साहित्य का विकास दक्खिनी गद्य के रूप में 14 वीं शताब्दी से ही देखने को मिलने लगता है। ''खड़ी बोली के साहित्य का उद्भव एवं विकास प्रारम्भ में दक्षिण के अनेक मुस्लिम राज्यों के आश्रय में हुआ। खड़ी बोली गद्य का भी प्रारंभिक रूप दक्षिणी साहित्य में मिलता है। दक्षिण के साहित्यकारों ने अपनी भाषा को 'हिन्दी', 'हिंदवी', 'दक्खिनी', 'देहलवी', 'जबान हिन्दुस्तान' आदि कई नामों से पुकारा है, किन्तु वस्तुतः वह खड़ी बोली का ही प्रारंभिक रूप है।[4] 17वीं-18वीं शताब्दी से उत्तरी भारत में भी खड़ी बोली गद्य की परंपरा का सूत्रपात होता है। खड़ी बोली गद्य का सतत विकास गंग कवि कृत 'चंद छंद बरनन की महिमा', रामप्रसाद निरंजनी कृत 'भाषा योग वसिष्ठ, मुंशी सदासुखलाल कृत 'सुखसागर' इंशा अल्लाह खाँ से होते हुए फोर्ट विलियम कालेज के लल्लूलाल और सदल मिश्र की रचनाओं में देखने को मिलता है। आधुनिक काल में हिन्दी गद्य के विकास में सामाजिक पुनर्जागरण और धार्मिक आंदोलनों के अंतर्गत प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का बहुत बाद योगदान रहा। भारतेंदु युग में हिन्दी निबंधों की विशिष्ट उपस्थिति है।'' आधुनिक काल में गद्य के विकास की दृष्टि से भारतेंदु-युग एक सुनिश्चित आरम्भ-बिंदु है। गद्य के विभिन्न रूपों में भी निबंध इस युग की प्रतिनिधि और केंद्रीय विधा है। कदाचित इसीलिए प्रो0 प्रकाशचंद्र गुप्त ने इसे हिन्दी निबंध का स्वर्ण युग कहकर इसके महत्व को रेखांकित किया था। अपने शैली-गत वैविधय और रचना-वस्तु के आश्चर्यजनक विस्तार के कारण जैसी प्रौढ़ता तथा तेजस्विता इस काल के निबंध में दिखाई देती है य वैसी न तो इस काल के किसी अन्य गद्य-रूप में उपलब्ध है और न ही आगे के निबंध में दिखाई देती है-आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे युग विधायक निबंधकारों के बावजूद।''[5]

हिन्दी निबंध के अंतर्गत भारतेंदु युग से निबंधों के अभ्युदय के लिए उर्वर भूमि आधुनिक काल में प्राप्त हुई क्योंकि यही वह समय था जब गद्य की प्रौढ़ परंपरा का विकास हो चुका था, विचारों को प्रेषित करने के साधनों के रूप में पत्र-पत्रिकाओं का प्रचलन हो रहा था और सामाजिक तथा राजनीतिक आंदोलनों ने देश में जो जनजागरण की भावना को संचारित किया। रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है, ''यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शद्रि का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता है।''[6] गणपतिचन्द्र गुप्त अपने इतिहास के अंतर्गत निबन्धों का व्यवस्थित इतिहास का आरम्भ भारतेंदु युग से मानते हुए 'राजा भोज का सपना' को हिन्दी का पहला निबंधा स्वीकार करते हैं। ''हिन्दी के पहले निबंध के रूप में राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' के द्वारा लिखित 'राजा भोज का सपना' (1839 ई0) को स्वीकार किया जा सकता है, जिसमें स्वप्न की एक कथा के माधयम से नैतिक सिद्धांत एवं उपदेशात्मक विचार

का प्रतिपादन किया गया है''[17] हिन्दी निबंधा के इतिहास को मुख्यत: चार युगों में विभद्र किया जा सकता है-

(1) भारतेंदु युग (1857-1900)
(2) द्विवेदी युग (1900-1920)
(3) शुक्ल युग (1920-1940)
(4) शुक्लोत्तर युग (1940-अब तक)

हिन्दी नाटक का विकास शीर्षक के अंतर्गत नाटक की उत्पत्ति की व्याख्या करते हुए सर्वप्रथम संस्कृत साहित्य में भारतीय नाटकों के विकास का परिचय दिया है। 'आधुनिक युग का नाटक-साहित्य' शीर्षक के अंतर्गत लेखक ने नाटक के वर्तमान स्वरूप का आरम्भ 19 वीं शती से माना है। ''सन् 1850 से अब तक के युग को हम नाटङ-रचना की दृष्टि से तीन खंडों में विभद्र कर सकते हैं-(1)भारतेंदु युग-1857 1900 ई0 (2) प्रसाद युग (1900-1930) और (3) प्रसादोत्तर युग (1930 से अब तक)'[18] निबंधकार भारतेंदु के साहित्यिक अवदान का विवेचन करते हुए डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त का कथन उल्लेखनीय है, ''उस युग में जबकि 1857 की असफल क्रांति को लोग भूले नहीं थे, भारतेंदु ने ब्रिटिश शासन एवं उसके विभिन्न अंगों के जैसी स्पष्ट आलोचना अपने साहित्य में की है .(वह उनके उज्ज्वल देश-प्रेम एवं अपूर्व साहस का परिचय देती है''[19]

हिन्दी नाटकों का विकास अनेक रूपों और अनेक दिशाओं में देखने को मिलता है। किन्तु हिन्दी समाज में रंगमंच की प्रगतिहीनता और रेडियो-रूपकों, सिनेमा और एकांकी इत्यादि की सक्रियता के कारण हिन्दी नाटकों के विकास में बाधा परिलक्षित होती है। पिछले कुछ वर्षों में अव्यवसायिक संस्थाओं के द्वारा रंगमंच के विकास के प्रयास हुये हैं जिससे इसकी प्रगति द्रुतगति से हो रही है। हिन्दी में 'नयी कविता' और 'नयी कहानी' की भाँति 'नया नाटक' नहीं आया फिर भी यह कहा जा सकता है कि अपने युग और समाज की नवीनतम स्थितियों, परिस्थितियों, संवेदनाओं और अनुभूतियों को व्यंजित करने की दृष्टि से हिन्दी का नाटक उसकी अन्य सभी विधाओं की अपेक्षा सर्वधिक नवीन एवं अधुनातन है जो इस क्षेत्र के लेखकों की व्यापक अर्न्तदृष्टि एवं गंभीर सामाजिक चेतना को प्रमाणित करता है। वस्तुत: बिना न्यूनता की घोषणा और नयेपन के आंदोलन के भी किस प्रकार नवीनतम रहा जा सकता है, इसका उदाहरण आज का हिन्दी नाटक-साहित्य है।''[10]

हिन्दी नाटक साहित्य के सम्पूर्ण साहित्यिक परिचय और विवेचना के उपरांत 'हिन्दी एकांकी का विकास' शीर्षक के अंतर्गत एकांकी के साहित्यिक विकास और उसका सारगर्भित, अर्थपूर्ण तथा विस्तृत परिचय देते हैं। हिन्दी में एकांकी के उद्भव के संबंध में उनका कथन है, हिन्दी में प्राचीन ढंग के गद्य-बद्ध एकांकियों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के द्वारा हुआ। उन्होंने प्राचीन संस्कृत-नाटङ-साहित्य से प्रेरणा ग्रहण करते हुये नाटक व एकांकी के विभिन्न रूपों के विकास का प्रयत्न किया''।[11] हिन्दी के प्रथम एकांकी को लेकर मतभेद को लेकर विभिन्न विद्वानों जैसे हरदेव बाहरी, डॉ सत्येन्द्र, प्रो0 प्रकाशचन्द्र गुप्त आदि का प्रमाण देते हुये 'एक घूँट' को हिन्दी का प्रथम एकांकी मानने का समर्थन किया है। एकांकी की टैकनिक का 'एक घूँट' में पूरा निर्वाह है...अत: इसे स्वीकार कर लेने में हमें कोई आपत्ति नहीं है।''[12]

पुस्तक के अगले शीर्षक 'हिन्दी उपन्यास का विकास' में उपन्यास का अर्थ, उसकी विकास-यात्र एवं वर्तमान स्थिति का विवेचन करते हुये हिन्दी के पहले उपन्यास से संबन्धित विवाद पर गम्भीर विचार किया है। ाराम फिल्लौरी की 'भाग्यवती' ही काल-क्रमानुसार सबसे पहले आती है, अत: हम इसी को हिन्दी का पहला उपन्यास मान सकते हैं। पहली रचना के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसमें विकास की सभी परवर्ती मंजिलों के दर्शन हों-ऐसा होना संभव नहीं-अत: इसमें उपन्यास-कला का विकसित रूप दृष्टिगोचर न हो तो कोई बात नहीं, इससे इसकी प्राथमिकता का दावा खण्डित नहीं हो जाता।''[13]

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के अधययन के अंतर्गत हिन्दी उपन्यास का बहुत विस्तृत हस्तक्षेप है। यह विधा महाकाव्य परंपरा का स्थानापन्न मानी जाती है। हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (द्वितीय खण्ड) में 'हिन्दी उपन्यास का विकास' शीर्षक के अंतर्गत हिन्दी उपन्यासों को प्रारम्भिक युग (1877-1918) और प्रौढ़ युग(1918 से 60तक) नामक दो भागों में विभाजित करके उसके अधययन को सुगम बनाने का प्रयास किया है। 1960ई0 के अनंतर हिन्दी उपन्यासों की परंपरा का विश्लेषण उन्होंने 'हिन्दी उपन्यास की नवीनतम प्रगति' शीर्षक से हिन्दी उपन्यासों का परिचयात्मक इतिहास प्रस्तुत किया है।

हिन्दी कहानी के विकास का मूल्यांकन करते हुये डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त ने हिन्दी गद्य में कहानी विधा के क्रमिक विकास को रेखांकित करते हुये प्रथम कहानी और कहानीकार के संदर्भ में विचार किया है। हिन्दी गद्य में कहानी शीर्षक से प्रकाशित होने वाली सबसे पहली रचना 'रानी केतकी की कहानी' है जो सन् 1803 ई0 में इंशाअल्ला खाँ द्वारा लिखी गई आधुनिक ढंग की कहानियों का आरम्भ आचार्य शुक्ल ने 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन-काल से माना है। उन्होंने प्रारम्भिक कहानियों का विवरण इस प्रकार दिया है-(1)इंदुमती-किशोरीलाल गोस्वामी (1900 ई0), (2)गुलबहार-किशोरीलाल गोस्वामी(1902), (3) प्लेग की चुड़ैल-मास्टर भगवानदास (1902), (4)ग्यारह वर्ष का समय-रामचंद्र शुक्ल(1903), (5)पंडित और पंडितानी-गिरिजादत्त

बाजपेयी(1903), (6)दुलाईवाली-बंग महिला(1907) ये सभी कहानियाँ सरस्वती में प्रकाशित हुई थीं। इस प्रकार हिन्दी के प्रथम कहानीकार श्री किशोरीलाल गोस्वामी सिद्ध होते हैं।''[14] कहानी विधा के विकास का अध्ययन करने के लिए इस अध्याय को क्रमशः तीन उपशीर्षकों हिन्दी कहानी का प्रारम्भिक युग (1930ई0 तक), द्वितीय युग(1930 परवर्ती युग) तथा स्वातंत्र्योत्तरयुग में विभद्र किया गया है। स्वातंत्र्योत्तरयुग के अंतर्गत क्रमशः सभी परवर्ती कहानी आंदोलनों जैसे नयी कहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी, सहज कहानी और समान्तर कहानी इत्यादि की चर्चा करते हुये, उनकी विस्तृत विवेचना प्रस्तुत की गई है।

हिन्दी साहित्य में आत्मकथाएक स्वतंत्र विधा है। हिन्दी की प्रथम आत्मकथा के रूप में बनरसीदास जैन का जीवनवृत्त 'अध र्कथानक' शीर्षक से पद्य-शैली में 17 वीं शताब्दी में लिखा प्राप्त होता है। वास्तव में गद्य में आत्मकथा लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा हुआ। उन्होंने 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' शीर्षक में एक आत्मकथा लिखनी आरंभ की थी, जिसमें उन्होंने अपने परिवार आदि का परिचय दिया है किन्तु यह रचना दो-तीन पृष्ठों से आगे नहीं बढ़ सकी।''[15]

हिन्दी की आत्मकथाओं का परिचय देते हुए हरिवंशराय बच्चन की 4खण्डों में प्रकाशित आत्मकथा को लेखक ने हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा घोषित किया है। पुस्तक में 'हिन्दी आलोचना का विकास' शीर्षक अंतिम अध्याय में संकलित है। इसमें भारतीय साहित्यशास्त्र की प्राचीन परम्परा का सूक्ष्म परिचय देते हुये हिन्दी आलोचना के इतिहास की समीक्षा की है। अपनी आलोचनात्मक कृति 'साहित्य विज्ञान' के संदर्भ में उनका कथन है, इसमें भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-शस्त्र, सौन्दर्य-शास्त्र एवं आधुनिक मनोविज्ञान के आधार पर साहित्य की आत्मा(शद्रि), द्रव्य (तत्त्व) एवं शैली (रूप) का विश्लेषण वैज्ञानिक पद्धति से करते हुये आकर्षण शद्रि सिद्धान्त की स्थापना की गई है।''[16] इसी क्रम में लेखक ने हिन्दी के प्रमुख समीक्षकों तथा इतिहासकारों का परिचय देते हुए उनके आलोचनात्मक अवदान को रेखांकित किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (द्वितीय भाग), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018 ई0,पृ0-318

2. वही, पृ0-318, 3. वही, पृ0-318, 4. वही, पृ0-330, 5. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2020 ई0,पृ0-11, 6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013 ई0, पृ0-346, 7. डॉ गणपतिचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (द्वितीय भाग), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018 ई0,पृ0-346, 8. वही, पृ0-376, 9. वही, पृ0-377, 10. वही, पृ0-397, 11. वही, पृ0-399, 12. वही, पृ0-401, 13. वही, पृ0-418, 14. वही, पृ0-452, 15. वही, पृ0-468 16.वही, पृ0-484

◆◆◆

(पृष्ठ 35 का शेष) डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी.....

30. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1, हिन्दी साहित्य संसार, कई सड़क, दिल्ली संस्करण- 1985 पृ0 97

31. डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यग्य समग्र- 1, पृ0 98

32. 'पति प्रदर्शनी' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पति प्रदर्शनी, (स0) डॉ0 आर पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1. पृ0 98

33. 'पति प्रदर्शनी' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1 पृष्ठ 99

34. वही, पृष्ठ 99

35. 'पति प्रदर्शनी' डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 1, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृष्ठ 99-100

36. वही, पृ0 100

37. वही पृ0 190

38. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 3, परिजात प्रकाशन, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985, पृष्ठ 222

39. वही पृष्ठ 192

40. 'पति प्रदर्शनी', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी (स0) डॉ0 आर.पी. शर्मा, 'होली विरह रूपनावली' बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र- 3, परिजात प्रकाज़न, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985 पृ0 175-167 16 डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृ0 42

41. 'आधुनिकीकरण के पत्नी-प्रयास', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी,व्यंग्य समग्र-3, परिजात प्रकाशन, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985 पृ0 26

42. डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, आधुनिकीकरण के पत्नी-प्रयास, (स0) डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-3, परिजात प्रकाशन, डाक बंगाली रोड, पटना संस्करण- 1985 पृष्ठ 27

43. वही, पृ0 29

44. वही

45. बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-2, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृ0 182

46. 'बालवर्ष बीत जाने पर', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, (स0)

47. डॉ0 आर. पी. शर्मा, बालेन्दु शेखर तिवारी, व्यंग्य समग्र-2, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली संस्करण -1986 पृष्ठ 117 'किराएदार साक्षात्कार', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृ0 21

48. 'किराएदार साक्षात्कार', डॉ0 बालेन्दु शेखर तिवारी, पृष्ठ 20

49. वही, पृष्ठ 19

◆◆◆